रिपोर्ट

दिनांक 29 अगस्त 2017 को कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य सभा 'संवाद' द्वारा एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था 'साहित्य का अध्ययन क्यों?'। इस कार्यक्रम में वक्ता के रूप में हिंदी साहित्य के जाने-माने तीन विद्वान व आलोचक प्रोफेसर निर्मला जैन, डॉ विश्वनाथ त्रिपाठी और प्रोफेसर नित्यानंद तिवारी उपस्थित थे। कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत इस गोष्ठी में शिरकत करने आए वक्ताओं को एक-एक पौधा भेंट कर उनके स्वागत के साथ हुई। इस अवसर पर हिंदी विभाग की वरिष्ठ अध्यापिका डॉ रत्नावली कौशिक ने हिंदी भाषा व साहित्य के विकास में इन विद्वान वक्ताओं की भूमिका एवं योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि जिस तरह पिछले 50 सालों से दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी पठन-पाठन का कार्य करके साहित्य को सींचा और संवारा उसी का परिणाम है कि आज हिंदी हमारे सामने विकसित रूप में दिखाई दे रही है। उन्होंने कहा कि साहित्य मनुष्यता का द्वार खोलता है। उसका संबंध सामाजिक सरोकारों और संस्कारों से होता है। यही कारण है कि साहित्य का अध्ययन आज हमारे लिए प्रासंगिक हो जाता है।

कॉलेज के प्राचार्य डॉ. इंद्रजीत डागर ने विद्वान वक्ताओं का स्वागत करते हुए इस बात का जिक्र किया कि बी.ए.'आनर्स' के शुरुआत में ही हिंदी के जाने-माने वक्ताओं का इस कॉलेज में पदार्पण हिंदी और हिंदी के विद्यार्थियों के लिए शुभ संकेत है। उन्होंने कहा कि किसी भी देश की उन्नति उसकी अपनी भाषा पर निर्भर करती है। इसलिए अपनी भाषा के प्रति लगाव का होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने ने कहा कि हिंदी केवल भाषा ही नहीं बल्कि समझ और अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। इसलिए इसे सरल और सहज बनाकर ही लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

हिंदी विभाग के प्रभारी एवं वरिष्ठ अध्यापक डॉ. हरजेंद्र चौधरी ने इस संगोष्ठी के विषय-प्रवर्तन पर चर्चा करते हुए हिंदी के अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में कहा कि कोई चीज शाश्वत एवं सनातन तभी हो सकती है जिसकी जड़ें स्थानीय हो। उसे सर्वप्रथम अपनी जगह फलना-फूलना चाहिए, उसके पश्चात ही हम वैश्विकता की बात कर सकते हैं। हिंदी के साथ भी ऐसा ही है। अपने जापान एवं पोलैंड प्रवास के दौरान हिंदी शिक्षण के अनुभव को शेयर करते हुए डॉ. चौधरी ने कहा कि हिंदी को लेकर जबरदस्त प्रतियोगिता है। आज की स्थिति यह है कि वहाँ भी बहुत मुश्किल से हिंदी में दाखिला मिल पाता है। उन्होंने कहा कि पहले हिंदी पढ़ने का उद्देश्य उनके लिए भारतीय सभ्यता और संस्कृति को जानना-

समझना था, लेकिन आज उनके लिए कैरियर बनाने की भाषा है। इसीलिए हिंदी बाज़ार की भाषा के रूप में तब्दील होती जा रही है।

इस संगोष्ठी के पहले वक्ता प्रोफेसर नित्यानंद तिवारी ने साहित्य के साथ समाज,राजनीति और धर्म के संबंधों पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि साहित्य की संरचनाएं राजनीतिक, सामाजिक,धार्मिक आदि ताकतों की संरचनाओं के विरोध में होती है। यानी जो मनुष्य विरोधी ताकतें होती हैं उसके विरुद्ध में साहित्य की संरचनाएं काम करती हैं। चाहे इसके लिए खतरें ही उठाना क्यों न पड़ें। इस संदर्भ में प्रोफेसर तिवारी ने बाबा नागार्जुन की दो कविताएं 'लक्ष्मी' एवं 'मन्त्र' और बद्रीनारायण की एक कविता 'मेरी नींद की चिड़िया' का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा कि धर्मसत्ता और राजसत्ता के आंतरिक गठजोड़ की क्रूर संरचनाओं को इन कविताओं के माध्यम से समझा जा सकता है। ये कविताएं हमारे अंदर साहित्य-विवेक पैदा करती है। ये काम कोई दूसरा नहीं कर सकता।

संगोष्ठी के दूसरे वक्ता डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि आज का युग टेक्नोलॉजी का युग है जहां टेक्नीक की महत्ता होगी वहां न तो संवेदना होती है न विवेक। इसलिए यह मनुष्य विरोधी है। प्रोफेसर त्रिपाठी ने कहा कि जब तक यह समय मनुष्य विरोधी रहेगा तब तक कविता रहेगी। क्योंकि कविता मुश्किल समय में निकलती है। इसलिए आज कविता या साहित्य की प्रासंगिता बढ़ गयी है।

तीसरे और अंतिम वक्ता प्रोफेसर निर्मला जैन ने साहित्य अध्ययन के समक्ष आने वाली अनेक चुनौतियों को रेखांकित करते हुए कहा कि आज हिंदी का सवाल केवल पढ़ने या ज्ञान प्राप्ति भर नहीं है बल्कि जीविका का भी सवाल बन गया है। ऐसी स्थिति में जिस भाषा में साहित्य लिखा जा रहा है उस पर ध्यान देना ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि मौलिक अभिव्यक्ति जिस भाषा में होती हैं साहित्य भी उतना ही मौलिक होता है। क्योंकि साहित्य सोचने की दृष्टि और ढंग बदलता है, बेहतर मनुष्य बनाता है। इसलिए हिंदी को मौलिक अभिव्यक्ति की भाषा के रूप में विकसित करना होगा।

इस संगोष्ठी का संचालन रूपेश कुमार शुक्ल ने और धन्यवाद ज्ञापन डॉ विनय कुमार जैन ने किया।

डॉ. उपेंद्र कुमार सत्यार्थी
सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग